हिन्दी दिवस विशेषाँक

सितम्बर 16, 2019

द ग्लोबल टाइम्स

नारी की पहले से ही अपनी अलग पहचान है, उसे सिर्फ अपने आप को पहचानना है।

हरिवंशराय बच्चन की कविता *कोशिश करने वालों की हार नहीं होती* को चरितार्थ करती ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल की संस्थापिका डॉक्टर श्रीमती अमिता चौहान एक सुप्रसिद्ध शिक्षाविद्, दार्शनिक और परोपकारी महिला हैं। वह आर्थिक रूप से कमजोर लड़कियों की शिक्षा पर हमेशा जोर देती है। उन्होंने अमिताशा नाम से एक चैरिटेबल स्कूल को स्थापित किया है जो आर्थिक रूप से कमजोर लड़कियों को निशुल्क शिक्षा देता है। वह कहती हैं कि पढ़ी-लिखी महिला कई पीढ़ियों को सँवार देती है। बाधाओं से हार कर न बैठना और अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते जाना उनके जीवन का उद्देश्य है। बच्चों को अच्छे संस्कार और मूल्यपरक शिक्षा देना वह अपना कर्तव्य समझती हैं। श्रीमती डॉक्टर अमिता चौहान के निर्देशन में ऐमिटी समूह पिछले दो दशक से अधिक समय से अच्छी गुणवत्ता की शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से कार्यरत है तथा भारत और दुनियाभर में अपनी शैक्षिक पहुँच के प्रसार के पश्चात् यह बेहतरीन शिक्षा का मानक बन गया है। नारी उत्थान के विभिन्न पहलुओं पर उन्होंने अपने बेवाक विचार साँझा किए। उनसे प्रेरणा लेकर हर नारी अपने जीवन में कुछ कर गुजरने के अपने सपने को पूरा कर सकती है।

आपके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य क्या है?

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थी में मानव मूल्यों का विकास करते हुए उसे एक सुसंस्कृत नागरिक के रूप में उसका विकास करना होता है। साथ ही, उन्हें प्रतिभावान, देशभक्त, स्वाभिमानी और आत्मविश्वासी बनाना है। हमारी भावी पीढ़ी को अपनी संस्कृति पर गर्व होना चाहिए। उसे सही और गलत की पहचान होनी चाहिए। इसके साथ ही वह प्रतिस्पर्धात्मक उत्कृष्टता से परिपूर्ण होनी चाहिए। हम एक ऐसे शैक्षिक वातावरण का निर्माण करना चाहते हैं जिसमें छात्रों की प्रतिभा को निखारने में कोई कसर न रहे। मुझे बहुत प्रसन्नता है कि हम इस कार्य को सफलतापूर्वक अंजाम दे रहे हैं।

घर हो या बाहर, आप प्रत्येक जिम्मेदारी को बखूबी निभाती हैं। ये प्रेरणा कहाँ से मिलती है?

अपनी प्रत्येक जिम्मेदारी को बखूबी निभाने की यह प्रेरणा मुझे अपनी माँ से मिली है। मेरी माँ अपने परिवार के प्रति बहुत जिम्मेदार रही हैं। माँ को आदर्श रूप में देखते हुए बचपन से ही मुझे लगता था कि जीवन में जो भी कुछ कार्य करना हो, उसे पूरी जिम्मेदारी के साथ करना चाहिए। इसके साथ ही, मैंने हमेशा अपने पति को बहुत सत्यनिष्ठा से अपने काम को अंजाम देते हुए देखा है। इतना ही नहीं, ससुराल पक्ष में भी अपने सास-ससुर को जुझारू रूप से सभी कार्य करते देख मुझे निरंतर प्रयासरत रहने की शक्ति मिलती रही है। मेरे माता-पिता, मेरे सास-ससुर और मेरे पति डॉ॰ अशोक कुमार चौहान सदैव मेरे जीवन के प्रेरणास्रोत रहे हैं।

एक प्रतिष्ठित महिला होते हुए भी किन बाधाओं का आपको सामना करना पड़ता है?

आपने बिल्कुल ठीक कहा, एक महिला होने के नाते समाज में प्रतिष्ठा पाने के बावजूद भी घर और बाहर की जिम्मेदारियाँ तो एक महिला को उठानी ही पड़ती हैं। इसके लिए मुझे अपनी कुछ रूचियों को छोड़ना भी पड़ा है। यद्यपि इस प्रकार की बाधाएँ मेरे समक्ष कभी आई नहीं हैं, किन्तु फिर भी घर और बाहर दोनों की जिम्मेदारी निभाते हुए आपको कभी-कभी ऐसे निर्णय लेने पड़ते हैं जिनमें आप स्वयं कभी-कभी बहुत पीछे छूट जाते हैं। आपको स्वयं यह निर्णय करना होता है कि आपको क्या करना चाहिए, कैसे करना चाहिए और कहाँ-कहाँ, कौन-कौन सी चीजों की उपेक्षा की जा सकती है।

उदाहरण के लिए सोशलाइजिंग करना मुझे बहुत अच्छा लगता है, जबकि मेरी व्यस्त जीवनशैली में यह एक प्रकार की बाधा ही सिद्ध होती है। पसंद होने के बावजूद भी आप ये सब नहीं कर सकते। एक सीमित दायरे में ही समय व्यतीत कर पाती हूँ क्योंकि मुझे पता है मेरा पूरा ध्यान अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूरा करने पर ही होना चाहिए। मैं जो भी कार्य करती हूँ, पूरी जिम्मेदारी के साथ करती हूँ और अपने परिवार के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित हूँ। जीवन में आप कितने भी बड़े क्यों न हो जाएँ, आपकी कुछ ऐसी रूचियाँ होती हैं जो जीवनभर आपके साथ रहती हैं। जैसे मुझे घूमना-फिरना, बातें करना, नई-नई जगह पर जाना, शॉपिंग करना आदि बहुत अच्छा लगता है लेकिन समय के अभाव के कारण मेरे लिए यह करना अब आसान नहीं। इसलिए इन सभी चीजों से मुझे समझौता करना पड़ता है। मैं खुशनसीब हूँ कि मेरा परिवार, मेरे बच्चे सभी बहुत ज्यादा सपोर्टिव हैं। इसलिए मुझे इस प्रकार की ज्यादा दिक्कत नहीं आई।

नारी सशक्तिकरण हेतु प्रयास करना कितना आवश्यक है और क्यों?

निस्संदेह नारी का सशक्त होना अत्यावश्यक है। केवल अपने अधिकारों की माँग करना ही नारी सशक्तिकरण नहीं है। दरअसल, नारी सशक्तिकरण की शुरुआत घर से होती है। यदि किसी घर में माँ समझदार है और वह अपने बेटे और बेटी को भेद की दृष्टि से नहीं देखती तो ऐसे में लड़की स्वयं सशक्त होती है। जब माँ अपने बेटा और बेटी में अंतर करती है तब वहाँ लड़कियों में आत्मविश्वास की कमी हो जाती है। मेरा जन्म ऐसे परिवार में हुआ है जहाँ लड़का और लड़की में कोई भेद नहीं किया गया। मेरे माता-पिता ने सदैव लड़कियों को सशक्त बनाने का प्रयास किया है। आप मुझमें जो आत्मविश्वास देखते हैं उसका प्रमुख कारण यही है कि उन्होंने कभी बेटा और बेटी में अंतर नहीं किया। लड़कियों में सशक्तिकरण की भावना प्रेम से आती है। माता-पिता का प्रेम और विश्वास लड़कियों में नारी सशक्तिकरण को मजबूत करता है। केवल सड़कों पर नारे लगाना या हो-हल्ला करना मैं नारी सशक्तिकरण नहीं मानती। लड़कियों का अच्छा चरित्र-निर्माण करना, उन्हें यह बताना कि जीवन में क्या सही है और क्या गलत है; समझना चाहिए। एक नारी होने के नाते मैं सभी से अपेक्षा करूँगी कि सर्वप्रथम हमें नारी सशक्तिकरण का सही अर्थ समझना होगा। हमें यह समझना होना कि हम किस प्रकार एक अच्छी पत्नी, एक अच्छी माँ बनें। अपने बच्चों को शिक्षित करें एक नवीन समाज का सृजन करें। एक अच्छी नारी अपने बेटों को ही सही राह चलने की उचित शिक्षा देती है।

नारी उत्थान हेतु आप क्या कहना चाहेंगी?

मेरा मानना है कि नारी सदैव सशक्त है। यदि आवश्यकता है तो उसकी सोच को सकारात्मक दिशा देने की। एक घर को सुचारू रूप से चलाने की पूरी जिम्मेदारी औरत की होती है। नारी को अपना दृष्टिकोण बदलना चाहिए तो उसका उत्थान खुद ब खुद हो जाएगा। हमें इस दिशा में उचित कार्य करने की आवश्यकता है।

इस समाज में नारी को अपनी अलग पहचान बनाने की आवश्यकता क्यों है?

नारी की पहले से ही अपनी अलग पहचान है, उसे सिर्फ अपने आप को पहचानना है। हाँ, यह सही है कि घर में लड़कियों को दबाकर रखा जाता है परंतु उनकी हिफाजत और सुरक्षा के लिए ऐसा करना कभी-कभी जरूरी भी होता है। यह आपके परिवेश पर निर्भर करता है। लड़की को घर की इज्जत कहा जाता है। इससे अधिक महत्वपूर्ण बात और क्या हो सकती है!

नारी उत्थान हेतु आपकी क्या योजनाएँ हैं?

लड़कियों को शिक्षित करना उनके उत्थान के लिए बहुत जरूरी कदम है। मैं 'अमिताशा' के माध्यम से लड़कियों को शिक्षित करने और सशक्त बनाने का कार्य कर रही हूँ। लड़कियों को अच्छी शिक्षा देना बेहद जरूरी है। शिक्षा के माध्यम से ही उन्हें जीवन के सही मूल्य दिए जा सकते हैं। किसी भी लड़की में यह निर्णय लेने की क्षमता होनी चाहिए कि उसके लिए क्या सही है और क्या गलत। इसके लिए उसका शिक्षित करना जरूरी है। यही समाज में सुधार लाएगा।

महिलाओं को आप क्या संदेश देना चाहेंगी?

मैं तो यही कहूँगी कि नारी समाज की रीढ़ की हड्डी है। वह अपने बच्चों को जिस प्रकार के संस्कारों से पोषित करेगी, वैसे ही समाज का निर्माण होगा। आप यदि लड़का-लड़की को बचपन से ही समानता का पाठ पढ़ाएँगे तो एक स्वस्थ समाज की स्थापना स्वत: ही हो जाएगी। भारतीय संस्कृति में नारी को बहुत ऊँचे स्थान पर रखा गया है क्योंकि नारी में एक अच्छा समाज बनाने की क्षमता है। जी हाँ